सोलहसोमवार
व्रतकथा

सोलहसोमवार-व्रतकथा

अर्थात्

शिवमनसाव्रत-कथा

(केवल भाषा)

संग्रहकर्ता-

श्री पं० सिद्धनाथ शर्मा शास्त्री

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

शिवध्यानम्-

शिवं शान्तं शुद्धं प्रकटमकलङ्कं श्रुतिनुतम्,
महेशानं शम्भुं सकलसुरसंसेव्यचरणम् ।
गिरीशं गौरीशं भवभयहरं निष्कलमजम्,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम् ॥१॥

सत्यं शिवं सुन्दरम्

विनम्र-निवेदन

ॐ नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्दमूर्त्तये ।
निष्प्रपञ्चाय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे ॥ (उपनिषद्)

उस अखिल निरञ्जन निराकारब्रह्माण्डनायकसच्चिदानन्द-महाप्रभु-भूतभावनभगवान् श्रीपशुपतिनाथकोकोटयावृत्ति साष्टाङ्ग प्रणाम पूर्वकहार्दिकधन्यवाद है कि जिसकी पूर्ण कृपा कटाक्ष से आज यहधार्मिक पुस्तकलिखने का महान् शुभावसरप्राप्त हुआ है ।

जिन आशुतोषभगवान् श्रीशंकरजी की दिव्य-आराधना करके महर्षि नारद, मार्कण्डेय, पुष्पदन्ताचार्य, रावण, बाणासुर, भस्मासुर, आदि, एवंबड़े २ असंख्यदेव, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, मानव, और असुरगण परम उत्कृष्टसिद्धियांतत्कालही प्रत्यक्ष प्राप्तकरचुके हैं। जिनका साक्षी वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराणादिधर्मग्रन्थ अनादि-काल से देते हुए आज सारे संसार के भक्तजनों के मुख को शरद पूर्णिमाके चन्द्रमा के समान परम उज्वल कर रहे हैं।

उन्ही कैलासवासी भोलेनाथ की उपासना की कल्पवृक्ष की भांतिसकलमनोकामना तत्काल पूर्णसिद्ध करनेवाली "सोलहसोम-वारव्रत-कथा" (शिवमनसाव्रतकथा) नामकछोटीसी धर्म पुस्तक साङ्गोपांगरूप से शिवभक्तों की सेवा में द्वितीय संस्करण से समुप-स्थित है । उक्त पुस्तक प्राय:अद्यावधिकाशी, बम्बई, प्रयाग आदि-कही परभी प्रकाशित नहीं हुई, मुझे इसकी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ संस्कृत, हिन्दी, मराठी भाषा में प्राप्त हुई थीं, उनसे मैंने

सर्वोपकारार्थ क्रमवद्ध सरल हिन्दीभाषा में ही अनुवाद कर साथ में पूजन सामग्री शिवपूजनविधान शिवनामावल्यष्टक एवं शिव पञ्चाक्षरस्तोत्र शिवमहामन्त्र 'सोलहसोमवार-मनसाव्रतके माहात्म्य' सहित कथा, उद्यापनविधि, आरती, तथा शिवकीर्त्तनादिका अपूर्व संग्रह करके विश्वविख्यात "श्रीवेङ्कटेश्वर-प्रेस" बम्बई के अध्यक्ष महोदय श्रेष्ठिवर्य्य श्रीमान्धर्ममूर्त्ति खेमराजश्रीकृष्णदासजी को यह पुनःपुनः प्रकाशनार्थ, राजनियमानुसार सर्वाधिकारपूर्वकसहर्ष सादर समर्पित की है।

उक्त शिवमहाव्रत श्रद्धाभक्तिपूर्वक तथा अखण्डरूपसे धारण करने पर जन्मजन्मान्तरों के सम्पूर्ण पापों का नाश, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धनधान्य, पुत्र पौत्रादिका पूर्ण सुख एवं समस्त आशाओ की शीघ्र प्राप्ति होकर परमपद प्राप्त होता है।

अतः अशा है भक्त समाज इससे अवश्य लाभ उठाते हुवे क्षणभंगुर इस दुर्लभ मानव शरीर को सार्थक करेंगे और भ्रमवश यदि इसमें कहीं पर कोई त्रुटि रह गई हो तो कृपया विद्वज्जन क्षमा प्रदान करेंगे। इति.।

"सिद्धभवन" सुखेड़ा (म. प्र.)
रक्षाबन्धन, सं. २०१५
दिनांक,, २९-८-५८

विनीतः-
पण्डितश्रीसिद्धनाथशास्त्री.
"ज्योतिषरत्न, एवं रमलशास्त्री
पो. मु. सुखेडा, मण्डल रतलाम
(म. प्र.)

" धर्माधिकारपत्रमिदम् "

॥ श्रीमच्छंकरोविजयतेतराम् ॥

स्टेटग्वालियर.
मुकाम सुखेडा.

★

तारीख ८।३।३६
जा० नं ११७

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पदवाक्यप्रमाणपारावारीण यम नियमासनप्राणायामप्रत्याहारध्यानधारणासमाध्यष्टङ्गयोगाचरणनिरूपित चक्रवर्तित्याद्यनाद्यनवच्छिन्नगुरुपरम्पराप्राप्तसकलवैभव निगमागमाखिलवेदान्तानुभवाधिगताद्वैतभावसंजातशुद्धान्तःकरणयुक्त वैदिकमार्गप्रवर्तक श्रीकैलासक्षेत्रस्थित सुवर्णहीरामणि माणिक्य मौक्तिकविलसन्मण्डप सिंहासनारूढ श्रीविष्णुप्रयागतीरनिवास सर्वतन्त्रस्वतन्त्रश्रीगुरुचरणकमलोपासनसंलब्ध श्रीमत्सुधन्वनः साम्राज्य प्रतिष्ठापनाचार्य श्रीमत् त्रोटकाचार्य परम्पराप्राप्त श्रीमन्महाराजाधिराजत्व विशिष्टज्योतिर्मठाधिपत्य षट्दर्शनस्थापनाचार्योऽ अखण्डभूमण्डलाचार्य जगद्गुरु श्रीनगर महास्थान राजधानी युक्त श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीशङ्कराचार्य श्रीविश्वेश्वरानन्द करकमल संजाताभिषेकज्योतिर्मठाधीश्वर श्री १०८ श्री श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीसदानन्दगिरिस्वामिभिःप्रणीताः ।

मूलस्थान—बद्रिकाश्रम अवांतरसंस्थान भानपुरा, स्टेट इन्दौर

स्वस्ति श्रीमत् परमशिष्योत्तम दयादानदाक्षिण्याद्यनेकसद्गुण गणालंकृत वेदविहितनित्यनैमित्तिककर्मानुष्ठानतत्पर सकलनिगमागम पारावारप्रवीण श्रीमच्छंकरचरणकमलार्चनतत्पर धर्मधुरन्धर राजज्योतिषी रमलशास्त्री पं० सिद्धनाथ अग्निहोत्री सुखेड़ा निवासीको ॐनमो नारायण स्मरण पूर्वक " पुत्र पौत्राद्यखिलश्रिर्जीवेत्याशीर्वादाःप्रतिदिनंसमुल्लसतुतराम् " ।

विशेष श्रीशङ्करस्वामी सच्चिदानन्दगिरि महाराजका शुभागमन मुकाम सुखेड़ामें मिति फाल्गुन शुक्लात्रयोदशी गुरुवार सं० १९९२ को हुआ, और समस्त ब्रह्म समाजने आचार्य श्रीकास्वागत पूर्णरूपसे किया, परन्तु इस प्रान्तके विप्रवर्ग विद्या व ब्रह्म कर्मसे हीन दृष्टि गोचर हुए यद्यपि आप धार्मिक शिक्षा तनमनसे दे रहे हैं तथापि द्रव्या भावके कारण विद्यालयगिरीस्थितिमें है यह पूर्ति भगवान् कैलास-वासी शङ्कर अवश्य शीघ्र पूर्ण करेगा।

हम आपके अतुल परिश्रमको देखकर धन्यवाद देते हुए साथमें सहर्ष यह भी आज्ञा प्रदान करते हैं कि आप अपने सत्कार्य पर अटल बने रहें तथा ब्राह्मणोंके षट् कर्म व कर्मकाण्डकी शिक्षा सम्पूर्ण विप्र कुमारोंको देकर सनातन धर्मका प्रचार करें व यथा शास्त्र धर्माधर्म विवेचनपूर्वक प्रायश्चितका भी आप निर्णय करके सन्मार्ग बताते रहें-

समस्त प्रिय विप्रमण्डलीको शुभाशीर्वादके साथ प्रेमपूर्वक सूचित किये जाते हैं कि आप लोग स्वधर्म (संध्योपासनादिक नित्यकर्म) व धर्म सम्बन्धी निर्णय गायत्री उपदेश व धर्म मर्यादा कायम रहे ऐसे समग्र शास्त्रोक्त वचन उक्त पण्डितजीसे सहर्ष ग्रहण किया करें।

इस गुरु आज्ञाका पालन प्रत्येक शिखा सूत्रधारी सानन्द पूर्वक स्वीकृत कर ब्रह्मकर्म और स्वधर्मकी रक्षा करेंगे। इतिशम्।

महाराजा श्रीजीकी आज्ञासे—**अनेक आशीर्वादाः।**

Secretary
H. H. Jyotirmathadipati Shreemat Jaganguru
Shree Shankaracharya

उपाधिपत्रमिदम्

ॐ

श्रीचन्द्र संस्कृत महाविद्यालयस्य-

प्रमाणपत्रमिदम्

आसभैरवम्, काशी

मन्दसोर मण्डलान्तर्गत सुखेड़ा ग्राम निवासिनो माननीय पण्डित रेवाशङ्कर भट्टस्यात्मजः श्रीपण्डित सिद्धनाथ शर्मा ।

अयमेक विंशति वर्षेऽस्मद्विद्यालये व्याकरण, काव्य, कोश, ज्योतिष, रमलशास्त्रादीन्यध्यीत्य समीचीनं नैपुण्यं गतः ।

अतोऽस्मैशीलवते "ज्योतिषरत्न" रमल शास्त्री चेत्युपाधिनाऽलंकृत्वेदं प्रमाणपत्रं प्रदीयते ।

विक्रमाब्दीये-
१९८८ श्रावण मासे
शुक्लपक्षे-एकादश्याम्
चन्द्रवासरे, तदनुसारे
ता० २४।८।३१ ईशवीये

वेदान्तकेसरी—
हः स्वामि दर्शनानन्दस्य श्रीचन्द्र-
संस्कृत महाविद्यालयाध्यक्षस्य,
आस भैरवं, काशी.

मानपत्रमिदम्

ॐ

श्रीगायत्री-रुद्र-दुर्गा-महायज्ञसमितिपेटलावद, जिला झाबुआ, मध्यप्रदेशद्वारा समर्पित

" सन्मान-पत्र "

यह सम्मान-पत्र समर्पण करते हुए समितिको महान् हर्ष है कि रतलाम मण्डलान्तर्गत सुखेडानिवासी श्रीमान् माननीय पूज्य पंण्डित श्रीसिद्धनाथजी शास्त्री राज-ज्योतिषीने यहां के श्रीगायत्री-रुद्र-दुर्गा महायज्ञको २५ विद्वानोंके साथ बड़े समारोह पूर्वक, आचार्य पदको सुशोभित कर वेद ध्वनि, एवं शास्त्रोक्त विधि विधानसे परिश्रम पूर्वक निर्विघ्न सम्पादन किया।

जिससे चारों ओरसे दूर दूरसे आई हुई असंख्य जनता श्रीयज्ञ-नारायण भगवान्के अपूर्व दर्शन कर परममुग्ध होकर कृतार्थ हुई। अतः आपकी इस सराहनीय पुनीत सेवासे समिति परम प्रसन्न होकर यह " सन्मानपत्र " सादर समर्पित करती है। इति।

यज्ञ-स्थलः
श्री नीलकण्ठेश्वर महादेव-
मंदिर, पेटलावद
वै. शु. १० गु. वि.सं. २०१४

हः फतेराम गंगाराम सोना,
यज्ञाध्यक्षः
महायज्ञ-समिति, पेटलावद

सोमेश्वर चतुर्वेदी, बी० टी० सी० विशारद
मन्त्रीः
महायज्ञ-समिति, पेटलावद, मण्डल झाबुआ, (म० प्र०)
दिनांक ९-५-१९५८ ई०

शिवपूजनसामग्री

❀ सुपारी, कुंकुम, केशर, नाड़ा, अक्षत (चावल) पवित्र जलसे भरा ताम्बेका लोटा, गंगाजल, पंचामृत (दूध दही घृत शहद शक्कर) विजया, भस्म, यज्ञो-पवीतजुट्टा १ , दूर्वा, शुद्ध बिल्वपत्र, आकके फूल, पुष्प माला, अबीर, गुलाल, अगरबत्ती १, घृतका दीपक, गुड़, मिश्री, नैवेद्य (आधासेर आटेका गुड़का चूरमा) खारक, बादाम, दाख, लवंग, इलायची, अतर, ऋतु-फल, नागरवेल का पान, श्रीफल, कर्पूर, संकल्प तथा पूजन में चढ़ाने को पैसे, प्रधान श्रीसाम्बशिव देवता को यथाशक्ति भेंट, भूरसी दक्षिणा ।

नोटः—उपरोक्त सामग्रीमें से समय पर जितनी भी उपलब्ध होसके उतनी से ही शिवपूजन यथाविधि अवश्य करें ।

ॐ श्रीसाम्बशिवाय नमः

सङ्कल्प

आचम्य—ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणायनमः ॐ माधवायनमः। इन तीन मन्त्रों को बोलते हुए तीन बार आचमन करके " ॐ गोविन्दाय नमः" इस मन्त्र से हाथ धो लेवें।

प्राणानायम्य—प्राणायामके मन्त्रों से, या गायत्री, द्वादशाक्षर अथवा पञ्चाक्षर मन्त्र सेतीन प्राणायाम करें।

देहशुद्धिः—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां-गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ इस मन्त्रको बोलते हुए अपने शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर जल छिड़कें।

मंगलोच्चारण—ॐ श्रीमहागणाधिपतये नमः। ॐलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्ट

देवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः । ॐ ग्राम-देवताभ्योनमः । ॐ स्थान देवताभ्यो नमः । ॐ वास्तु-देवताभ्यो नमः । ॐ आदित्त्यादि नवग्रह देवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमोनमः । अविघ्नमस्तु ॥

उपरोक्त देवोंका ध्यान पूर्वक नाम बोलते हुए नमस्कार करें ।

संकल्पः—ॐ अद्यैवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौअमुकगोत्रः—अमुक नामाहं ममात्मनः श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थम् श्रीभवानीशंकर महा-रुद्र देवता प्रीतये, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं सोलह सोमवार व्रताचरणनिमित्तं श्रीसाम्बशिवपूजनम् करिष्ये ।

दाहिने हाथमें जल और गन्धाक्षत लेकर—अमुक के जगह अपना जो गोत्र—नाम हो उसका उच्चारण करते हुए 'करिष्ये' यहांतक बोलकर जल पृथ्वीपर छोड़देवें तत् पश्चात् भगवान् शंकरका पूजन प्रारम्भ करें।

अथ श्रीशिवपूजनविधान

ध्यानम्

ॐ ध्यायेन्नित्यंमहेशंरजतगिरिनिभंचारुचन्द्रावतंसं ।

रत्नाकल्पोज्वलाङ्गम्परशुमृगवराभीतिहस्तंप्रसन्नम् ॥

पद्मासीनंसमन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिंवसानं ।

विश्वाद्यंविश्ववन्द्यंनिखिलभयहरंपञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम् ॥ १ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः ध्यानार्थेऽक्षतान् समर्पयामि

आवाहनम्

ॐ आगच्छदेवदेवेश तेजोराशे जगत्पते ॥

क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ॥ २ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः—आवाहनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि ।

आसनम्—

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम् ॥

अग्निहोत्रंत्रिवेदाश्चयज्ञाश्चबहुदक्षिणाः ॥ शिवलिङ्गार्चनस्यैते कोटयंशेनापिनोसमाः ॥ १ ॥ असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ॥ काश्यांवासः सतांसंगोगंगाम्भः शम्भुसेवनम् ॥ २ ॥ (स्कान्दे)

विभूतिधारणं कृत्वा कृत्वा रुद्राक्ष धारणम् ।

यः शिवं पूजयेद्भक्त्यासमोक्षमधिगच्छति ॥

आसनं देवदेवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः—आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि ।

पाद्यम्—

पाद्यं गृहाण देवेश सर्वक्षेमकरं प्रभो ॥
भक्त्यासमर्पितं देव लोकनाथनमोऽस्तुते ॥ ४ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः पादयोःपाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्—

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर ॥
नमस्ते जगदाधार अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम् ॥५॥

श्रीसाम्बशिवायनमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम्—

कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम् ॥
आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ ६ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः—आचमनीयं समर्पयामि ।

स्नानम्—

गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥
स्नापितोऽसि महादेव ततः शान्तिकुरुष्व मे ॥ ७ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः स्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम्–

पञ्चामृतं मया देव पयोदधिघृतं मधु ॥
शर्कराभिः समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ८ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि, ततः शुद्धोदकस्नानं च समर्पयामि ।

भस्मम्–ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम् यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नोऽस्तुत्र्यायुषम् ॥

वस्त्रम्–

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ॥
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ ९ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्–

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तंत्रिगुणं देवतामयम् ॥
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १० ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

गन्धम्–

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ११ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षताः—

अक्षतास्तण्डुलाः शुभ्राः कुंकुमेन विराजिताः ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १२ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः=अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनिवै प्रभो ॥
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१३॥

श्रीसाम्बशिवायनमः ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि समर्पयामि ।

❀ बिल्वपत्राणि—

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च विच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ॥
तव पूजां करिष्यामि—अर्पयामि सदाशिव ॥ १४ ॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिरायुधम् ॥
त्रिजन्म पापसंहारमेकबिल्वंशिवार्पणम् ॥ १५ ॥

श्रीसाम्बाशिवायनमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

अबीरगुलालानि—

अबीरं च गुलालं च चोवाचन्दनमेव च ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण सुरसत्तम ॥ १६ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः सौभाग्यपरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

❀ पंचाक्षरेण मन्त्रेण बिल्वपत्रैः शिवार्चनम् ।
करोति श्रद्धया यस्तु सगच्छेदैश्वरं पदम् ॥ (ब्रह्माण्डे)

धूपम्—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गंध उत्तमः ॥
आघ्रेयः सर्वदेवानांधूपोऽयंप्रतिगृह्यताम् ॥१७॥

श्रीसाम्बशिवायनमः धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्—

साज्यं सुवर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं मया ॥
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥ १८ ॥

श्रीसाम्बशिवायनमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्यम्—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ॥
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ १९ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः नैवेद्य समर्पयामि ।

ॐ प्राणाय नमः ॐ अपानायनमः ॐ व्यानाय नमः ॐ उदानाय नमः ॐ समानाय नमः, मध्ये-पानीयं०—उत्तरापोशनम्० हस्तप्रक्षालनम्० मुख-प्रक्षालनम्०—आचमनीयं करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनंच सम-र्पयामि । तदनन्तरमाचमनीयं सम० ॥

पूगीफलताम्बूलम्—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥

कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलंप्रतिगृह्यताम् ॥ २० ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः पूगीफलतांबूलञ्च समर्पयामि ।

दक्षिणा

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीज विभावसोः ॥

अनन्तपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ २१ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

कर्पूरारार्त्तिक्यम्-

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ॥

सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवंभवानीसहितं नमामि २२॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः कर्पूरारार्त्तिक्यं महानीराजनं समर्पयामि ।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः-

नानापुष्पसुगन्धाढ्यो दत्तः पुष्पाञ्जलिस्तव ॥

भक्त्या मया गृहाणेमं प्रसीद परमेश्वर ॥ २३ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ।

❁ प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥

तानितानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ २४ ॥

श्रीसाम्बशिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

❁ देवीकी एक प्रदक्षिणा , सूर्यकी सात, गणेशजीकी तीन, केशवकी चार, और भगवान् शंकरकी आधी ही प्रदक्षिणा करें ।

नमस्काराः—

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे॥
सहस्रनाम्नेपुरुषाय शाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणे नमः२५

श्रीसाम्बशिवाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रार्थना—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥ २६ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व जगदीश्वर ॥ २७ ॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तवदर्शनात् ॥ २८ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सदाशिव ॥
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २९ ॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजंवा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जयजय करुणाब्धे श्रीमहादेवशम्भो ॥ ३० ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखात्वमेव॥
त्वमेवविद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥ ३ १॥

अनया पूजया श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम ।

इति श्रीसाम्बशिव पूजा विधानं समाप्तम् ।

अथ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितम् शिवनामावल्यष्टकंस्तोत्रम्

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे, स्थाणो गिरीश गिरिजेशमहेशशम्भो ॥ भूतेश भीतिभयसूदन माम-नाथं, संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥१॥ हे पार्वती-हृदयवल्लभ चन्द्र मौले, भूताधिप प्रमथनाथ गिरीश-जाप ॥ हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसारदुःख गहनाज्जगदीश रक्ष ॥ २ ॥ हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पंचवक्त्र, लोकेशशेषवलयप्रमथेशशर्व ॥ हे धूर्जटे पशुपते

शिवपादोदकमहिमा—

गंगा पुष्कर नर्मदा च यमुना गोदावरी गोमती, गंगा द्वारवती प्रयाग बदरी वाराणसी सिन्धुषु॥रेवा सेतु सरस्वती प्रभृतिषु ब्रह्मा-ण्डभांडोदरे, तीर्थस्नानसहस्रकोटिफलदं श्रीशम्भुपादोदकम् ॥

गिरिजापते मां संसार दुःख०॥३॥ हे विश्वनाथ शिव शंकर देवदेव, गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश ॥ बाणेश्वरांधकरिपो हर लोकनाथ, संसार दुःख० ॥४॥ वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश, वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश ॥ सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ, संसार दुःख० ॥ ५ ॥ श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो, हे व्योमकेश शितिकंठगणाधिनाथ ॥ भस्मांगराग नृक-पालकलापमाल, संसार दुःख० ॥६॥ कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे मृत्युञ्जय त्रिनयनत्रिजगन्निवास ॥ नारायणप्रियमदापह शक्तिनाथ, संसार दुःख० ॥७॥ विश्वेशविश्वभवनाशित विश्वरूप, विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश ॥ हे विश्ववंद्यकरुणामय दीनबन्धो, संसार दुःख० ॥८॥ गौरीविलास भुवनाय महेश्वराय, पंचाननाय शरणागतकल्पकाय॥शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितंशिवनामावल्यष्टकंसम्पूर्णम् ॥

शिवपंचाक्षरस्तोत्रम

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनायभस्मांगरागाय महेश्वराय ॥ नित्याय शुद्धाय दिगम्बरायतस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥ मन्दाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ॥ मन्दारपुष्प बहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥२॥ शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ॥ श्रीनीलकंठाय वृषध्वजाय तस्मैशिकारायनमः शिवाय ॥३॥ वसिष्ठ कुंभोद्भव गौतमाय मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ॥ चंद्रार्क वैश्वानरलोचनाय तस्मैवकाराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥ यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ॥दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥ पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ॥ शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितंशिवपंचाक्षरस्तोत्रंसम्पूर्णम्-

तेनश्री सांबसदाशिवापर्णमस्तु

" शिवमहामन्त्राः "

वेदोक्त रुद्र गायत्री मन्त्रः–

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायधीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ १ ॥

वेदोक्त सम्पुटित महामृत्युञ्जयमन्त्रः–

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे-
सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्यो
र्मुक्षीयमामृतात् स्वः भुवः भूः सः जूं ॐ हौं ॐ ॥२॥

त्र्यक्षरी मृत्युञ्जयमन्त्रः--

ॐ जूं सः ॥ ३ ॥

शिव पंचाक्षर मन्त्रः--

ॐ नमः शिवाय ॥ ४ ॥

पुराणोक्त मृत्युञ्जयमन्त्रः–

ॐ मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ॥
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्म बन्धनैः ॥५॥

श्रीः

ॐ नमः शिवाय

अथ सोलहसोमवारव्रत कथा

अर्थात्

शिव मनसाव्रत–कथा प्रारम्भ,

मङ्गलाचरण

नमोङ्कार स्वरूपाय वेदरूपाय ते नमः ॥
अलिङ्गलिंगरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥ १ ॥
सपार्वतीकं विश्वेशं सलक्ष्मीकं च केशवम् ॥
प्रणतोऽस्मिसदाकुर्यात्तदङ्घ्रियुगुलंशिवम्॥२॥

श्रीगणेशाय नमः श्रीसाम्बशिवाय नमः ।

एक समय महामुनि श्रीसूतजी महाराज शौनकादिक मुनियोंसे कहने लगे कि, विदर्भ देशमें एक अत्यन्त सुन्दर अमरावती नामकी नगरी है। वहां देवाधिदेव भगवान् श्रीमहादेवजीका विशाल मन्दिर बड़ाही रमणीक बना है, जिसकी महिमाका वर्णन

प्रायः तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है। वहांपर एक समय आशुतोष भगवान् श्रीशिवजी पार्वतीजीके सहित कैलाससे घूमते २ एकाएक आनिकले उस पवित्र मनोहर-स्थानको देखकर पार्वतीजीने शिवजीसे कहा कि हे नाथ! यहां चौपड़ पांसा मांडकर खेल खेलना चाहिये। यह सुन शिवजीने उसी समय अपने दूतोंसे चौपड़ पांशे मंगवाकर खेल आरम्भ किया, खेल खेलते २ देवी पार्वतीजी चौपड़की बाजी जीत गई यह देखकर महादेवजी कहने लगे कि यह बाजी तो मैं जीता हूं। इसके बाद फिर दुबारा खेल खेलना प्रारम्भ किया तो फिरभी पार्वतीजी जीत गई, तब पार्वतीने उस शिवालयका जो गुरवनामका पुजारी निकट था उससे पूछा कि अबकी बार यह बाजी किसने जीती है, सत्य २ कहो, मौन क्यों बैठे हो। तब गुरव पुजारी बोला, यह बाजी शिवजीने जीती है, ऐसा सुन उमाने क्रुद्ध होकर पुजारीको शाप दिया कि तेरे सारे शरी-

रमें कोढ़ हो जावेगी इसमें विलम्ब बिलकुलही नहीं लगेगा क्योंकि तू असत्य बोला है । इस प्रकार गुरवको भयंकर शाप देकर उमा सहित श्रीशिवजी कैलासधामको पधार गये। तदनन्तर गुरव पुजारीने अपना शरीर देखा तो सतीके शापसे सारे वदनमें कोढ़ही कोढ़ दिखाई दी, इस महाविकट दुःखके कारण गुरव चित्तमें चिन्ता करने लगा कि कहां जाऊं, किससे कहूं क्या उपाय करूं ? हे श्रोताओ ! इस तरह वह गुरव मनही मनमें व्याकुल हो चिन्ता करही रहा था कि उसी समय स्वर्गसे एक अप्सरा पूजनकी सामग्री लेकर पशुपतिनाथ (श्रीमहादेवजी) का पूजन करनेके लिये उस शिवालय में आई, उसने मन्दिरमें आते ही उस महादुःखी गुरव पुजारीसे पूछा कि तुम्हें यह कोढ किस प्रकार क्यों हुई है । तब गुरवने बड़ी ही नम्रतासे विनयपूर्वक कहा कि मैं बहुत घबरा रहा हूं और सत्यता पूर्वक कहता हूँ कि मुझे श्रीपा-

र्वतीजीने शाप दिया है । हे माता ! कोई उपाय हो तो कृपया शीघ्र बताओ, इतना कह दुःखी हो गुरव अप्सराके चरणोंमें गिरपडा । तब अप्सरा कहने लगी तुम किसी तरहसे मत घबराओ और शुद्ध अन्तःकरण एवं श्रद्धा भक्तिसे प्रेम पूर्वक❋"सोलह-

---

भविष्य पुराणे—

❋ सोमवारव्रतं नाम सर्वव्रतफलाधिकम् ॥
तस्मिन्न कृते पराप्रीतिरावयोःस्यादुमेशयोः ॥१॥
व्रतं वा प्रीतिदं स्कन्द ह्युमया सहितस्य मे ॥
अतःसोमाह्वयोवारः प्रशस्तोऽयं ममप्रियः ॥ २ ॥
ध्यात्वा सुनियमंकृत्वा सर्वाभ्युदयिकं तथा ॥
आचार्येण समं कुर्यान्मदाराधनमादरात् ॥३॥
त्र्यम्बकं च तथा गौरीं निर्मायेतिजपन् सुधीः ॥
नारी वा पुरुषो वापि महेशस्य परं पदम् ॥ ४ ॥
अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत् ॥
अविद्यो लभते विद्यामिति धर्मविदोविदुः ॥ ५ ॥

भावार्थः—भविष्यपुराणमें लिखा है कि सोमवार नामका व्रत सम्पूर्णव्रतोंसे अधिक फल देनेवाला, और इसके धारण करनेपर

सोमवार—मनसाव्रत"का आचरण करो इससे तुम्हारा कोढतत्काल ही दूर हो जावेगा। और उस सुन्दरीने-व्रतका माहात्म्य एवं विधि बतलाई कि हे गुरव ! सोमवारके दिन दिनभर निराहार रहना फिर सायंकाल प्रदोषके समय श्रीपार्वतीसहित शिवजीका पूजन शास्त्रोक्त विधिविधानसे करें, तथा पञ्चाक्षर (ॐनमः

श्रीशिवपार्वती में भक्ति प्राप्तकरनेवाला है ॥ १ ॥ भगवान् शंकर अपने प्रियपुत्रस्वामी कार्तिक से कहते हैं कि हे स्कन्द ! यह व्रत पार्वती सहित मुझे अत्यन्त प्रीति देनेवाला है, इसीकारण से सोमवार नामका वार मेरा बहुत प्यारा है ॥ २ ॥ व्रतके दिन समग्र नित्य क्रिया करके शुद्धाचरणसे शिवजीका ध्यान कर श्री आचार्यके साथ बड़ी ही श्रद्धाभक्तिसे मेरी आराधना अर्थात् पूजन स्तवन प्रार्थनादिक करें ॥ ३ ॥ और शिवपार्वती की मूर्ति बनाकर प्रेमपूर्वक विधिसहित पूजन करें तथा पञ्चाक्षर (ॐ नमः शिवाय) इसमहामन्त्रका जपभी करें ॥ ४ ॥ यदि यह व्रत स्त्री अथवा पुरुषधारण करें तो श्री शिवजी के परमपद (शिवलोक) को प्राप्त होता है। निर्धनधनवान् होता है और विद्याहीन विद्याको प्राप्त होता है ऐसा बड़े २ धर्माचार्योंने कहा है ॥५॥

शिवाय) इस महामन्त्र का यथाशक्ति जाप कथा शिवकीर्त्तनादि भी करें। तत्पश्चात् आधासेर पक्का-गेहूंका आटा लेकर विना नमकके तीन रोट बनाय अग्निपर सेंक घी गुड़ मिलावें, और चूरमा तय्यार कर उसके तीन भाग (हिस्से) प्रत्येक में बिल्वपत्र छोड़ कर श्रद्धाभक्तिके साथ भगवान् श्रीभवानीशंक-रको नैवेद्य समर्पण करें फिर पहिला भाग शिवजीकी जलाधारी में अर्पित करें, दूसरा भाग ब्रह्मचारी बाल-कोंको ही प्रसाद वितरण करें, और तीसरा भाग व्रतकर्ता-स्वयं प्रसाद ग्रहण करलेवें। इस प्रकार बिना खण्डितके इस सोलह सोमवार-मनसाव्रतका आचरण प्रेम भावसे करता रहे। जब सत्रहवां सोमवार आवे उस शुभदिन इस महाव्रतके उद्यापन[1] (उजमने) का

---

[1] उद्यापनका विधान (प्रयोग) कथा के अन्त में शास्त्रोक्त विधि से सरलता पूर्वक भाषाटीका सहित लिखा है।

विधान कुटम्ब परिवारके साथ विधि पूर्वक यथा शक्ति अवश्य करें। तब पांचसेर गेहूँका आटा लेकर बिना नमकके ही रोट बनाय अग्निपर सेंक कर घृत गुड़ मिलाकर चूरमा बनावें, एवं पूजनहवनादिकी सम्पूर्ण सामग्री लेकर शिवालयमें जाकर सपत्नीक शास्त्रोक्त विधिसे उद्यापनका कार्य प्रारम्भ करें। अर्थात् पूजन, अभिषेक, हवन, कथा, आदि करके एवं उस चूरमाके तीन भाग बनाकर नैवेद्य आशुतोष भगवान् शिवजीको समर्पण कर उसका प्रथम भाग तो श्रीमहादेवजीको अर्पण करें, दूसरा भाग मन्दिरमें प्रसाद बटावें, रहा तीसरा भाग इसे अपने घरपर लाकर सकुटुम्ब प्रसाद ग्रहण करें। इस तरह विधि[१] बतला कर अप्सरा

---

१ उक्त सोलह सोमवार-मनसाव्रत श्रावण मासके प्रथम सोमवार को समाप्त करना, प्रारम्भके दिन शुभ समय में कन्या के हाथसे कच्चेसूतके चारधागे कतवाकर उनमें चार गांठ भी देकर शिवव्रत डोरा तयार करना। फिर श्रद्धा भक्ति से भगवान शंकर एवं उस डोरे का पूजन यथाविधिसे करना, व पांच अक्षत शिव-

बोली कि हे गुरव ! तू निश्चय मानसे यह सर्वोत्तम व्रत धारण कर, तेरा समग्र कुष्ठ श्रीशिवजी अवश्य ही दूर करेगें, यह सत्य २ त्रिवाचा है। इतना कह वह अप्सरा शंकरजीका पूजन करके स्वर्गलोकको चलीगई। तदनन्तर उस गुरवने सत्य अन्तःकरण और श्रद्धा

—जीको तथा पांच अक्षत डोरेको चढ़ावें और क्षुधितजन (भूखा) को भी पांच अक्षत हाथमें देकर उसके सन्मुख कथा बांचे, कथा समाप्त होने पर वह अक्षत शिवजी को अर्पण कर देवें एवं डोरे पर चढाये हुए पांच अक्षत व्रतकी समाप्तिपर्यन्त सुरक्षित रखे। इसी विधि से ही उक्तशिव महाव्रत शुद्धान्तः– करण और अखण्डरूप से आचरण करते हुए ही समाप्त करें। यह व्रत सम्पूर्ण प्रान्तों में सोलह सोमवार व्रत, सोलह सोमवार मनसाव्रत, अथवा शिव मनसा व्रत इननामों से प्रसिद्ध है एवं पूजन कथा नैवेद्य-आदि सबपूर्वोक्त विधि अनुसार समानरूप से होता है। किन्तु सौराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश के किन्हीं २ भागों में उपरोक्त व्रत को केवल "शिव मनसा व्रत" इस नाम से ही पुकारते हैं। सब भक्त जन इसको श्रावण शुक्लाचतुर्थी तिथि से प्रारम्भ कर कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तिथि को समाप्त कर देते हैं इसके मध्यके प्रत्येक सोम-

भक्ति से यह व्रतधारण किया. व्रत के समाप्त होते ही उस गुरव पुजारीका कुष्ठ इस व्रतके प्रभावसे बिलकुल चला गया तथा पहिलेकासा शरीर निर्मल एवं स्वच्छ हो गया, धन्य धन्य है उस सोलहसोमवार मनसाव्रतको।

—वार को व्रत रहकर यथाविधि पूजन कथा एवं चूरमाका नैवेद्यादि समर्पण करते हुए समाप्त करते हैं। व्रत समाप्ति के शुभ दिन अर्थात् कार्तिकि शुक्ला चतुर्थी को विधि पूर्वक उद्यापन, तथा नैवेद्य सवाचार सेर गेहूं का आटा, सवासेर गुड़, एकसेर घृत लेकर बिना नमक के मोदक या चूरमा बनाकर तयार करें फिर शिवालय मेंजाकर श्रद्धा भाव से भगवान् शंकर व डोरा की पूजन करके भूखा के सामने कथा वांचकर, डोरे की गांठें खोल कर इसके पहले के चढाये पांच अक्षत यह दोनों श्री महादेवजी को समर्पित कर देवें। अभिषेक हवनादि समस्तविधि करके एवं उस चूरमा का तीन भागकरके श्री साम्बशिव देवताको भक्तिपूर्वक नैवेद्य समर्पण कर व्रतकर्त्ता यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन दान दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करें। तत्पश्चात् सकुटम्ब स्वयं प्रसाद ग्रहण करें। प्रादेशाचार से उक्तमहाव्रत का विधान कहीं २ ऐसा भी होना पाया जाता है।

कुछ दिनोंके पश्चात् शिवपार्वती कैलाससे घूमते२ मृत्युलोकमें एक दिन फिर उसी शिवालय के पास पधारे वहां गुरव को पहिलेका दिया हुआ शाप पार्वतीजी को स्मरण हो आया, और गुरव को निकुष्ठ (कोढ रहित) आरोग्य देखकर पार्वतीजीने पूछा हे गुरव ! तेरा कुष्ठ किस विधि व क्या उपाय करने से चला गया है । तब गुरव पुजारी हाथ जोड़कर अकुलाता हुआ चरणोंमें गिरकर बोला हे माता ! मैंने कैलासवासी भगवान् श्रीशंकरजी का ध्यानकर "सोलह सोमवार-मनसाव्रत" को धारण किया है उन्ही भवानीशंकरकी पूर्ण कृपा से मेरा सम्पूर्ण कष्ट (कुष्ठादिक) निवारण हुआ, उन प्रभुकीलीला अनन्त और अपरम्पार है। ऐसा कहकर गद्‌ गद्‌ हो व्रत की विधि आदि से अन्त तक वर्णन करने लगा। इस तरह गुरव पुजारी के मुख से व्रतकी विधि और माहात्म्य सुनकर पार्वती अति विस्मित हो मन में

कहने लगी कि इस व्रत की महिमा बड़ीही चमत्कारी है। इस व्रत को विधि विधान सहित प्रेमपूर्वक मैं भी धारण करूंगी, क्योंकि मेरा पुत्र स्वामी कार्त्तिक मुझ से रुष्ट होकर अकेलाही वन में चला गया है, वापस शीघ्र आने की कामना से पार्वतीजीने व्रत को करना प्रारम्भ किया, व्रत के समाप्त होते ही वन में रहते हुए स्वामी कार्त्तिक मन में विचार करने लगे कि माता से क्रोध करना ठीक नही है। ऐसा निश्चय कर उसी समय वन से वापस आकर माता के चरणों में साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम किया, अपना प्रिय पुत्र कार्तिक स्वामी को देख श्री पार्वतीजी प्रसन्नताके मारे मन में नहीं समाने लगी। इसके बाद स्वामी कार्तिक माता पार्वती जी से बोले कि मेरा मन तुम्हारे पास एक क्षण भर भी रहना नहीं चाहता था, पर आज एकाएक अन्तःकरणमें ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि श्री माताजी के शुभदर्शन शीघ्र ही करना चाहिये।

सो हे जननी ! इसका क्या कारण है । यह सुन गिरिजा बोली हे श्रेष्ठपुत्र ! मैंने सोलह सोमवार मनसा व्रतका आचरण किया है यह सब उसी व्रत का प्रभाव है जो तेरे चित्त में मुझ से मिलने की सद्भावना प्राप्त हुई । इस प्रकार कार्तिक स्वामीने यह वृत्तान्त बहुत चित्त लगाकर सुना, और कहा कि हे मातेश्वरि ! यह तादृश उत्तम व्रत मैं भी करना चाहता हूं कृपया इसकी आद्योपान्त विधि बतला दीजिये, कारण कि मेरा एक परमप्रिय ब्राह्मण देवमित्र है वह बहुत दिनों से न मालूम कहां चला गया हैं । मुझे उससे मिलने की बड़ी ही उत्कण्ठा है ! तब पार्वती जीने व्रत की विधि बतला दी। तदनन्तर स्वामी कार्तिक ने भी विधिवत् सोलह सोमवार मनसा व्रत हार्दिक भाव से करना आरम्भ किया, व्रत के समाप्त होते ही उसीदिन एक सुन्दर वन में घूमते २ सहज ही में कार्तिक स्वामी की व उनके परममित्र ब्राह्मण

देव की अकस्मात् भेंट होगई । दोनों आपस में बड़े प्रेम से मिले परस्पर कुशल क्षेम पूछनेके बाद ब्राह्मण ने कहा, हे मित्र ! आपकी व मेरी यह एका-एकी रास्ता में जो भेंट हुई है यह अत्यन्त आश्चर्य-जनक है ।

तब स्वामी कार्तिक बोले कि भ्रात ! मैंने एक अद्भुत सोलह सोमवार मनसा व्रतकिया है यह इसी व्रत की महिमा का फल है, यह सुन वह मित्र मन ही मन विस्मित होता हुआ कार्तिक स्वामी से कहने लगा कि हे सखे ! मेरी ईच्छा श्रेष्ठ विवाह करने की है । इसलिये कृपया मुझे भी इस व्रत की विधि बतला देवें, यह सुन स्वामी कार्तिकने अपने परम मित्र (ब्राह्मण) को पूर्णतया विधि बतलादी । विप्र व्रत को श्रद्धा भक्ति एवं प्रेमपूर्वक प्रारम्भ कर देशदेशा-न्तरों में घूमने लगा । कर्म की गति बड़ी ही विचित्र और गहन होती है, व्रत के पूर्ण होते ही

घूमते२ एक दिन ब्राह्मण को मार्ग में एक सुन्दर नगर प्राप्त हुआ वहां की अपूर्व दिव्य शोभा को देखकर विश्राम के लिये वहीं ठहर गया। उस नगर के राजा धर्मधुरन्धर थे, उनकी एक कन्या सम्पूर्ण गुणों से युक्त सुशीला एवं बड़ी ही सुन्दरी थी। हे श्रोताओ ! उस समय राजाने उस कन्या का स्वयम्वर महोत्सव धूमधाम से रचाया था, वहां अनेक देशों के राजकुमार और अठारह वर्ण असंख्य जन आकर इकट्ठे हुए थे। उसी स्वयम्वर को देखने हेतु वह ब्राह्मण भी जा पहुंचा। वहां पर राजाने एक सुन्दर हथिनी को सारा श्रृङ्गार कराकर एवं उसकी सूंड में एक "जयमाला" देकर सभामें छोड़दिया, वह हथिनी फिरती २ वहां आई जहां कि वह ब्राह्मण खड़ा था, उसने आते ही ब्राह्मण के गले में जयमाला डाल दी और उसे अपने शिर पर बैठा लिया। राजाने यह देख बड़ा आनन्द मनाया और प्रसन्नता के साथ कन्या

का विवाह संस्कार वेदोक्त विधि से कर दिया, एवं अतुलधन धान्य आभूषणादि सहित उन दोनों के रहने के लिये एक निराला सुन्दर भवन भी दे दिया। इस तरह ब्राह्मण सुन्दर राजकन्या को पाकर सुख से जीवन व्यतीत करने लगा। एक दिन वह राज-कुमारी अपने पतिदेव (ब्राह्मण) से पूछने लगी कि हे प्राणनाथ ! आपने कौनसा ऐसा भारी पुण्य किया था, जिसके प्रताप से मैं आप को प्राप्त हुई हूं। यह सुन वह ब्राह्मण कहने लगा कि हे प्रिये ! मैंने आशु-तोष भगवान् शंकर का ध्यान लगाकर सोलह सोम-वार मनसा व्रत धारण किया था उसी महाव्रत के पुण्य से तू मुझे पत्नी प्राप्त हुई है। यह सुन राज-कुमारी आश्चर्य करती हुई कई बार धन्य २ कहकर बोली कि यह व्रत तादृश फल देनेवाला और बड़ा ही चमत्कारी है, इसका मैं भी हार्दिक श्रद्धा भक्ति से चिरंजीव पुत्र कामना के लिये आचरण करूंगी।

इतना कह उस राजपुत्रीने उक्त व्रत करना प्रारंभ किया, व्रतके पूर्ण होते ही कुछ ही दिनोंके पश्चात् राजकुमारीको भूत भावन भगवान् शंकरकी असीम कृपासे सौवर्षकी उम्रवाला, सुशील, ज्ञानी, पुण्यशील,प्रतापवन्त तथा माता पिताकी सेवा करनेवाला, आज्ञाकारी, सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। वे दम्पत्ति (पति-पत्नी) मन ही मन इस शिव महाव्रतकी महिमाका वर्णन करते हुये एवं पुत्रको देख २ कर बड़े ही हर्षित हुए। इस तरह जब उस ब्राह्मणका पुत्र कुछ बड़ा हुआ तो थोड़े ही दिनोंमें पढ़-लिख कर सम्पूर्ण ज्ञानसे निपुण हो, एकदिन विनय पूर्वक हाथ-जोड़कर मातासे प्रश्न करने लगा कि हे जननी ! मैं सकल गुण सम्पन्न तुम्हें कौनसे पुण्य तपके प्रतापसे प्राप्त हुआ, यह सुन माताने उत्तर दिया कि हे धर्मशील पुत्र ! मैंने उत्तमशिवव्रत (सोलहसोमवार मनसाव्रत) भक्ति पूर्वक एकाग्रमनसे धारण

किया है जिससे त्रिशूलपाणि (महादेवजी) ने प्रसन्न होकर हमारी मनोकामना पूर्णकी । ऐसा सुन उस पुत्रने नम्रतासे फिर पूछा कि हे माताजी ! कृपया इस परम श्रेष्ठ व्रतकी विधि मुझे भी बतला दीजिये । मैं भी इस व्रतको शुद्धान्तः करणसे अवश्य ही धारण करूंगा क्योंकि मेरी इच्छा दुःखोंसे रहित होकर विशाल राज्य प्राप्त करनेकी है । तब माताने उक्त महाव्रतकी विधि आद्योपान्त अपने प्रिय पुत्रको बतलादी, फिर ब्राह्मणके पुत्र ने इस व्रतको यथाविधि करना प्रारम्भ किया । व्रत पूर्णभी होने नहीं पाया था कि एक विशाल देशके राजा जिनकी बिलकुल वृद्धावस्था प्राप्त हो गई थी, उसके कोई पुत्र नहीं था केवल एक कन्या सन्तान ही थी । उस समय राजाने सारे राज्य भरमें यह घोषणा करदी कि मैं राजसहित अपनी कन्या स्वयम्बर द्वारा प्रदान करूंगा । यह सुन विप्र कुमार भी गया और स्वयम्बरमें कैलासवासी

भगवान् शंकरकी कृपासे उस राज कन्याने सर्वगुण सम्पन्न उस ब्राह्मणपुत्रको चुन लिया एवं नृपति श्रेष्ठने वेदोक्त विधिसे कन्याका विवाह संस्कार महोत्सवके साथ कर दिया, तथा राज्यके सम्पूर्ण अधिकार राज्य सहित देकर आप वनमें तप करनेके लिये चला गया।

इधर ब्राह्मण (राजा) व्रतके प्रभावसे अपनी धर्मपत्नी रानीके साथ अनेकों सुख भोगते हुए नीति पूर्वक राज्य कर रहे थे, उसी समय जबव्रत पूर्ण होनेमें आया, और, सत्रहवां सोमवार आकर प्राप्त हुआ। उस शुभदिन राजाने अपनी प्रियतमा रानीसे सब सामग्री लेकर एवं पांचसेर गहूंके आटेका चूरमा बनाकर और उसके बराबर तीन भाग करके भगवान् शंकरजीके मन्दिरमें चलनेके लिये कहा तब रानीने मनही मनमें विचार किया कि राजा ऐसी कृपणता क्यों कर रहे हैं, पांचसेर रुपयोंकी थाली भरकर शिवालय में क्यों नहीं पधारते ऐसा पूर्ण निश्चय कर

रानीने पांच सेर रुपया थालीमें भरकर अन्य सामग्रीके सहित दासदासियोंके साथ मन्दिरमें पहुंचा दिये, और रानी पतिदेवके साथ शिव पूजनके लिये नहीं गई। अतएव यह व्रतभंग हो गया और भगवान शिव उसी समय क्रोधित हो यति (दण्डीसाधु का रूपधारण कर राजा (विप्र) के पास आकर बोले कि राजन् ! तेरी रानीने शिवव्रत भंग कर दिया है, इस लिये इसको राज महलसे शीघ्र ही बाहर निकालदे नहीं तो तेरा सारा राज्य नष्ट भ्रष्ट होकर भयंकर अनर्थको प्राप्त हो जावेगा। इस प्रकार यतिरूप शिवजी राजासे ऐसी बात कर ही रहे थे कि बीचमें प्राचीन प्रधान मन्त्री गण बोल उठे कि यह राज्य इस रानीके पिताका दिया हुआ है। अतः रानीको निकालना बिलकुल अनुचित है। तब शिवजी फिर महाक्रोध करके कहने लगे कि हे मूढ प्रधानो ! जिसने भगवान् शंकरका व्रतभंग कर दिया है अब उसको

घरमें रखना ठीक नहीं है । तब राजाने दोनों तरफ का विचार कर उसी समय रानीको राज महलसे बाहर निकाल दिया, रानी बड़ी दीन दुःखी होकर अत्यन्त शोक के साथ वहांसे पांव पैदल ही चल पड़ी । चलते २ बहुत दूर जाकर एक गांव दिखाई दिया, रानी उस ग्राममें जाकर एक वृद्धा (बुढिया) के घर रहने लगी । वृद्धा रानीको देख प्रसन्न हुई और बोली कि एक कार्य तुझे सौंपती हूं कि यह रूईके फौले हैं इन्हें बाजार में लेजाकर बेच आ, यह बात वृद्धाकी सुन रानी हर्षित हो रूईके फौले लेकर बाजा-रमें बेचनेको गई । परन्तु वहां भगवान् शंकरजीके प्रकोप से उसी समय ऐसी भयंकर आंधी चली जिससे रूईके फौले सब उड़ गये । तब रानीने आकर बुढ़ियासे कहा हे माता ! वे रूईके फौले तो अद्‌भुत पवनके चलनेसे सब ही उडगये । उस वृद्धाने आश्चर्य युक्त यह वचन सुनकर रानीसे कहा अब तू मेरे घरसे

शीघ्र चलीजा, तब रानी वहांसे निकलकर एक तेलीके घर रहने लगी । उस तेली के यहां तेलके भरे हुए घट रखे थे, रानीकी दृष्टि जब तेल पर पड़ी तो शिवजीके महाकोपसे तत्काल ही सब घडोंका तेल उड़ गया । तेली यह देखकर विस्मित हो कहने लगा कि यह दीना स्त्री मेरे घरमें रहती है, तेलके भरे घड़ोंको इसके देखते ही सब का सब तेल उड़ गया है । अतःरानीसे बोला, कृपा कर मेरे घरसे बाहर निकलजाइये, और अन्यत्र कहीं भी जाकर रहिये, यदि तुम मेरे यहां रहोगी तो मैं अवश्य भिक्षुक हो जाऊंगा । ऐसा कह तेलीने भी रानीको अपने घरसे बाहर निकाल दिया।

रानी वहां से चलते चलते एक नदी के तट पर पहुंची वहां उसकी दृष्टि पड़ते ही उस नदी का सारा पानी तुरन्त सूख गया । तब रानी मन में बड़ी आश्चर्य करती हुई विचार करने लगी कि यह सब मेरे ही महापापों (दोषों) का फल है ।

तदनन्तर वह रानी नाना तरह के महा संकट उठाती हुई एवं मारे २ चारों और वनोवन घूमने लगी, फिरते २ अकस्मात् एक सुन्दर निर्मल जल से भरा सरोवर (तालाब) देखा, रानी उस तालाब के समीप आई और जलके ऊपर उसके दृष्टि डालते ही पानीमें असंख्य कीडे पड़ गये। यह देख और अधिक व्याकुल होने लगी, उसी समय वहां पर ग्वालबाल गौओं और बछड़ोंको चराते हुए पानी पिलानेके लिये आये हुए थे। उन्होंने भी उस जलके भीतर असंख्य कीड़े पड़े हुवे देखे तो आपसमें कहने लगे कि यह पानी नहीं पिलाना चाहिये। ऐसा कहकर खाली ही चले गये।

इतने में ही वहां जल लेनेके लिये एक तपस्वी गुसाईं महाराज भी आये और उन्होंने भी यह चरित्र देखा तो उनको रानीकी दशा पर बड़ी दया आई। फिर कहीं अन्यत्रसे पानी भरकर एवं उस रानीको

साथ ले अपने आश्रम पर आये। गुसाईंजी ने रानी से कहा बेटी ! तू मेरी कन्याके समान है, तेरे लिये अन्न वस्त्रकी कोई कमी नहीं है तू यहां स्वस्थ (एकाग्र) चित्तसे रह। यह बात सुन वह रानी उन महात्मा गुसांईजीके आश्रममें रहने लगी, वह आश्रमका समस्त कार्य करती थी परन्तु शिव व्रत भंग करनेसे अनेकों दुःख उठाती हुई खाने पीनेकी जितनी वस्तुओंको स्पर्श करती उतनी ही चीजोंमें कीड़े पड़ जाते थे। यह देख गुसांईजी अत्यन्त चिन्तातुर हो आश्चर्य करने लगे, और विचार करने लगे कि अब क्या यत्न करना चाहिये, इस निराश्रित दीन दुःखिया अबला पर क्या दोष लगा है। कोई ऐसा उपाय शीघ्र करना चाहिये, जिससे इसके सर्व दोषादि संकट निवृत्त हो जायँ। इस प्रकार पूर्ण निश्चय कर गुसांई महाराजने उसी समय भगवान् शंकरका उग्र तप (अनुष्ठान) करना प्रारम्भ कर दिया। उससे कुछ ही समयमें

भोलेनाथ प्रसन्न हुए और प्रत्यक्षरूपमें प्रकट होकर बोले, जो तेरे अन्तःकरणमें हो वर मांग। तब गुसांई जी चरणोंमें गिरकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे कि भगवन् ! इस भाग्यहीना अबला पर क्या दोष है और उससे यह कैसे छुटकारा पा सकेगी, प्रभो ! कृपाकर यह मुझे बतलाइये । तब दीनदयालु भगवान् शिवने कहा हे तपस्विन् ! इस रानीने मेरे सोलह सोमवार मनसा व्रतको भंग कर दिया है । अतः इसी महादोषसे इसे अनेकों संकट प्राप्त होकर ऐसी महा-विकट दशा प्राप्त हुई है, यह रानी हार्दिक भाव भक्ति से इस मेरे परमप्रिय "सोलह सोमवार मनसा व्रत" को यथाविधि अखण्ड आचरण करें तो हे महात्मन् ! व्रत समाप्त होने पर ही यह सम्पूर्ण दोषों एवं दुःखों से छूट जायगी तथा स्वयं इसका पति यहां आकर शीघ्र ही इसे ले जावेगा और पहिलेकी तरह अतुल सुख और सौख्य प्राप्त करेगी । हे श्रोताओ ! महादेवजी

ऐसा वरदान देकर कैलासधामको अन्तर्ध्यान हो गये !

तदनन्तर श्रीगुसाई महाराजने उस रानीसे इस सोलह सोमवार मनसाव्रतको विधिवत् अखण्डश्रद्धा-भक्ति पूर्वक धारण करवाया। उक्त महाव्रतके पूर्ण होते ही रानीके सारे संकट दूर हो गये अर्थात् इस व्रतके प्रतापसे उधर कई दिनोंमें राजा एक दिन अपने मनमें विचार करने लगे कि रानी की खोज कहीं कराना चाहिये। ऐसा निश्चय करते ही तुरन्त दूतोंको बुलाकर रानीको ढूंढनेके लिये चारों ओर देशदेशान्तरोंमें भेज दिया। दूत ढूंढते २ वहां आ निकले जहां रानी श्रीगुसाईजीके आश्रम पर रहती थी, रानी की व दूतोंकी परस्पर पहचान हुई। फिर दूतोंने जाकर रानीके सम्पूर्ण शुभ वृत्तान्त राजाको आद्योपान्त कह सुनाये। दूतोंसे यह सम्वाद सुन राजा बहुत ही प्रसन्न हो, प्रधान मन्त्री सहित उस वनमें आकर गुसाईजी महाराजसे मिले, और रानीको अपने साथ

लेकर चलनेको तैयार हुए। उस समय राजा ने गुसाईं जीको वस्त्रादि भेंट कर नम्रतासे प्रार्थना कर क्षमा-याचना की। तब गुसांईजीने राजासे कहा राजन्! मैंने आजतक इस रानीको अपनी कन्याके समान रखकर पालन किया था, अब आप इसका पालन करना। इतना कह प्रेमाश्रुलाकर गद्गद् हुए उस समय राजा-रानीने श्रीगुसांईजी महाराजके चरणोंमें साष्टाङ्ग नमस्कार कर एवं मधुर वाक्योंसे उनका समाधान कर रानी सहित रथमें बैठकर अपने नगरमें आये, और चारों ओर नगरमें आनन्द महोत्सवकी बधाई घर घर पर होने लगी।

राजा रानीके आते ही राजभवनमें अनेक तरहके बाजे बजने लगे, व मंगल नृत्य गान होने लगे, इस प्रकारका महोत्सव राजा ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक किया और उसी समय ब्राह्मणों को भोजन, दान, दक्षिणा एवं अतिथि याचकोंको मनचाहा नाना प्रकारका दान, धन धान्यके सहित देकर प्रसन्न किया। इस तरह

राजा रानीकी भेंट होनेसे सब प्रजाको बड़ा हर्ष हुआ, और राजा निष्कंटक धर्म व नीति पूर्वक राज्य करने लगा।

सूतजी महाराज इस प्रकार शौनकादि मुनियोंको कथा सुनाते हुए कहने लगे कि इस सोलह सोमवार मनसाव्रतको पृथ्वीपर कोई भी जन, श्रद्धाभक्ति एवं यथा विधिसे आचरण करेगा उसपर आशुतोष भगवान् श्रीशिवजी शीघ्र ही प्रसन्न होकर उसके जन्म जन्मान्तरोंके समस्त पाप, दोष, दारिद्र, रोग, व सर्व संकटादिको निवारण करेगें। तथा जो कोई मनोकामनाधर आदर सहित व्रत को पूर्ण करेगा उसकी समस्त मनोकामना पूर्ण सफल होवेगी। यह बिलकुल ही सत्य है।

हे श्रोताओ! इस शिव महाव्रतको हार्दिक भावसे अखंड धारण करनेपर अतुलधन धान्य, पुत्र, पौत्र, कन्या, यश, आरोग्य एवं आयुकी वृद्धि होकर इस

लोकमें अनेकानेक सुख प्राप्त कर अन्तमें परमपद (शिवलोक) प्राप्त होता है । तथा इस कथाको जो कोई श्रद्धापूर्वक एकाग्रमनसे सुनेगा अथवा सुनावेगा, उसपर श्रीउमामहेश सदा प्रसन्न रहेंगे ।

श्रीव्यासजी महाराज श्रोताओंसे विनय करते हैं कि यह उत्तम व्रत एवं कथा आदि कालसे है ॥

॥ इति श्रीसोलहसोमवार मनसा व्रत कथा समाप्त ॥

॥ ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

श्रीः

ॐ नमः शिवाय

अथ सोमवारव्रतोद्यापनविधिः

★

श्रावणे चैत्र वैशाखे ऊर्जे च मार्गशीर्षके ॥
प्रथमे सोमवारे तद् गृह्णीयाद्व्रतमुत्तमम् ॥१॥

एतद्व्रतं यावज्जीवं चतुर्दशाब्दमष्टावर्षतया पञ्चाब्द मथवा षोडशसोमवारपर्यन्तमेवकर्तव्यम् । अन्त्ये पूर्वोक्त श्रावणादि मासे शुक्लपक्षेऽन्तिमसोमदिने उद्यापनं कुर्यात् ।

अब " सोलहसोमवार मनसाव्रत " के उद्यापनका विधान कहते हैं कि इस सर्वोत्तम शिवव्रतको ❀ श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्त्तिक,या मार्गशीर्ष महीनोंके प्रथम सोमवारसे ग्रहण करें, और जीवन पर्यन्त, अथवा चौदह वर्ष, आठवर्ष, एवं पांच वर्ष, या केवल

❀ वर्त्तमान में श्रावण मास से ही सोमवार का व्रत प्रारम्भ-करने की परिपाटी प्रायः सर्वत्र पत्र लिखा है ।

सोलह सोमवार पर्यन्त ही श्रद्धाके साथ विधि पूर्वक धारण करें। उक्त व्रत समाप्त होनेपर ही पूर्वोक्त श्रावणादि महीनोंमें शुक्लपक्षके अन्तिम सोमवारके दिन इसका उद्यापन सपत्नीक करें।

तत्र प्रयोगः

प्रातर्नद्यादौ स्नात्वा नित्यकर्म कृत्वा, सपत्नीकः— आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वक सद्यः पुत्रपौत्रधनधान्यैश्वर्यादि प्राप्ति द्वारा श्रीमदुमामहेश्वर प्रीतये आचरित सोलहसोमवार मनसाव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति संकल्प्य, श्रीआचार्यवरणांतं पूर्ववत् ग्रहशान्त्यानुसारेण सर्वं कुर्यात्।

उसका प्रयोग (विधान) यह है कि प्रातःकाल नदी तालाव आदिमें स्नान कर और अपना नित्यकर्म करके पत्नीके सहित पूर्वाभिमुख बैठकर तीन बार आचमन करके प्राणायाम करें और दाहिने हाथमें जल लेकर 'ममात्मनः' से 'करिष्ये' यहां तक पूरा

संकल्प बोलकर पानीको भूमिपर छोड़ दे। संकल्पके इस मूल पाठका अर्थ यह है कि मेरे सम्पूर्ण पाप-नाश करनेके लिये एवं पुत्र पौत्रधनधान्यादि ऐश्वर्यकी शीघ्र प्राप्तिके लिये और पार्वतीशिवजीके प्रसन्नार्थ जो यह सोलह सोमवार मनसाव्रतका आचरण किया है इसकी पूर्ण साङ्गतासिद्धि निमित्त सपत्नीक उद्यापन करूँगा। ऐसा संकल्प करके पूर्वोक्त प्रकारसे आचार्य-वरणसे लगाकर यथा क्रमग्रहशान्त्यादिपद्धतिसे समग्र ❀ कर्म यथाविधि करें।

ततः आचार्यो मण्डपंकृत्वा तत्र अष्टादशांगुलोत्सेधां वित्तस्तिद्वयविस्तृतां समचतुरस्रां वेदीं विधाय तत्र-लिंगतोभद्रं अथवा सर्वतोभद्रंवा शुक्ल तण्डुलैः षोडशारं कमलं विरच्य तत्र ब्रह्मादि देवताः सम्पूज्य तन्मध्ये

---

१ शान्तिपाठ गणेशांबिका, रुद्रकलश पुण्याहवाचन, नव-ग्रह षोडशमातृका, कुश कण्डिका एवं अग्नि स्थापन पर्यन्त समस्त कर्म ग्रहशान्त्यादि पद्धति से यथाविधि सम्पादन करें।

ताम्रकलशोपरि सौवर्णशिवं तद्वामे सौवर्णीं गौरींच पुरवो राजतं वृषभं प्रतिष्ठापयेत् ।

तदनन्तर आचार्य मण्डपकी रचना करके अठारह अंगुल ऊँचाई व दो बेंत सम चतुष्कोण शुद्ध मृत्तिका की वेदी बनाकर उसके पास—उत्तर या पूर्व दिशामें एकलिङ्गतोभद्र, अथवा सर्वतोभद्र मण्डप बनावें और सफेद चावलोंसे कमलाकार बनाकर वहां ब्रह्मादि देवताओंका आवाहन कर पूजन करें, तथा मध्यमें ताम्र का कलश स्थापित कर उस पर सुवर्णकी भगवान् शंकर की मूर्त्ति और बाईं तरफ सुवर्णकी पार्वतीकी प्रतिमा स्थापित करे, सामने चान्दीका नन्दीगण विराजमान करके इन निम्न मन्त्रोंसे आवाहन एवं प्रतिष्ठादि करे ।

तत्र मन्त्राः--ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शिव इहागच्छ इहतिष्ठ इमांपूजां गृहाण सुस्थिरो भव ॥ १ ॥

❋ ॐ आयंगौ्पृश्निरक्रमीद सदन्मातरंपुर÷ पितरञ्चप्रयँत्स्व÷ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरी इहागच्छ इहतिष्ठ इमां पूजां गृहाण सुस्थिराभव ॥२॥

ॐवृषभाय नमः वृषभ इहागच्छ इहतिष्ठ इमांपूजां गृहाण सुस्थिरो भव ॥

इत्यावाह्य परितः पूर्वादिक्रमेण । ॐअनन्ताय नमः १ ॐ सूक्ष्माय नमः २ ॐ शिवाय नमः ३ ॐ उत्त-माय नमः ४ ॐ त्रिमूर्त्तये नमः ५ ॐ रुद्राय नमः ६ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ७ ॐ शिखण्डिने नमः ८॥ पुनराग्नेय्यादि विदिक्षु ॐ गणेशाय नमः १ ॐ मातृभ्यो० २ ॐ दुर्गायै० ३ ॐ क्षेत्रपालाय० ४ । पुनः पूर्वादि दिक्षु ॐ इन्द्रायनमः १ ॐ अग्नये० २ ॐ यमाय० ३ ॐ निर्ऋतये० ४ ॐ वरुणाय० ५ ॐ वायवे० ६ ॐ कुबेराय० ७ ॐ ईशानाय० ८

---

१ ॐ गौरीमिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी चतुष्पदी अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमेव्योमन् ॥ श्रीगौर्य्यैनमः॥

एवं लोकेशांश्चप्रतिष्ठाप्य । पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः पञ्चामृतविल्वपत्राद्यैश्च सम्पूज्य पुष्पपूजान्ते अंग पूजां कुर्यात् । तद्यथा । ॐ शिवाय नमः पादौ पूजयामि १ ॐ शंकराय० गुल्फौ पूजयामि २ ॐ भवहारिणे० जानुनी पू० ३ ॐ शूलपाणये० कटीं पू० ४ ॐ शम्भवे० गुह्यं पू० ॐ महादेवाय० नाभिं पू० ६ ॐ विश्वकर्त्रे० उदरं पू० ७ सर्वतो मुखाय० पार्श्वौ पू० ८ ॐ स्थाणवे० स्तनौ पू० ९ ॐ नीलकण्ठाय० कंठ पू० १० ॐ देवाय० मुखं पू० ११ ॐ त्रिनेत्राय० नेत्रत्रयं पू० १२ ॐ शर्वाय० ललाटं पू० १३ ॐ शशिभूषणाय० शिरः पू० १४ ॐ देवाधिपाय० सर्वाङ्गं पूजयामि १५ एवं सम्पूज्यकर्पूरेणारार्तिकं कृत्वा प्रदक्षिणात्रयं विधाय साष्टांगं प्रणम्य चन्द्रमसे अर्घ्यंच दत्वा प्रणम्य शिवकीर्तन पूर्वककथाश्रवणादिना रात्रौ जागरणं कुर्यात् ॥

हाथमें अक्षत लेकर ' ॐ त्र्यम्बकं यजामहे '० इस मन्त्रको कहकर शिवजीकी मूर्ति पर आवाहनके लिये अक्षत छोड़े और इसी तरह " ॐ आयं गौः पृश्नि० इस मन्त्रका उच्चारण करते हुवे श्रीपार्व-तीजीका और 'ॐ वृषभाय०' इस मन्त्रसे श्रीनन्दि-गणके आवाहनके लिये अक्षत मूर्त्तिपर छोड़ देवें। फिर पूर्वादि आठों दिशाओंमें चारों तरफ "ॐअन-न्ताय नमः " से "ॐ शिखंडिने नमः" तकबोलते हुये अक्षतडालें। तथा आग्नेयादि चार विदिशाओंमें "ॐ गणेशायनमः से ॐ " क्षेत्रपालाय नमः " तक उच्चारण कर अक्षत छोड़दे, और फिरभी पूर्वादि आठदिशाओंमें अक्षत छोड़ते हुए 'ॐइन्द्रायनमः' से ॐ ईशानायनमः'तक बोलकर आवाहनके वास्ते अक्षत छोड़दें इस प्रकार लोकपालादिकीभी स्थापना कर एक तन्त्रसे सर्व देवोंको पुरुष सूक्त (वेदोक्त) मन्त्र द्वारा षोडशोपचारोंसे एवं पञ्चामृत विल्वपत्रोंसे पूजा करें

तत्पश्चात् भगवान् श्रीशंकरकी अंग पूजा भी अलग २ इसी क्रमसे करे, जैसे "ॐ शिवाय नमः" यह मन्त्र कहकर शिवजीके चरणोंकी पूजा करे। इसीतरह ॐ देवाधिपाय नमः तक उच्चारण करते हुए शिवजीके सम्पूर्ण अंगकी पूजा करें। इस प्रकारसे यथाक्रम श्रीसाम्बशिवका पूजन करके कर्पूरसे आरती उतारे, व प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग नमस्कार करें। और चन्द्रमाको अर्घ्य दान देकर प्रणाम करें एवं सम्पूर्ण रात्रि शिवकीर्त्तनके साथ कथा श्रवणादिसे जागरण कर समाप्त करें।

ततः प्रातः पुनः सर्व देवान् सम्पूज्य। स्थंडिले चाग्निं विधिवत् प्रतिष्ठाप्य आज्य भागान्ते। ॐत्र्यम्बकं

१ ॐ प्रजाप्रतये स्वाहा। इदं प्रजापतयेन मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐसोमायस्वा०। इदंसोमाय न मम। ॐभूं स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ भुवःस्वाहा। इदंवायवे न मम। ॐ स्वःस्वाहाइदं सूर्याय न मम॥

यजामहे० ॐ आयं गौ॰पृश्नि० इति मन्त्रेणयवव्रीहि तिलाज्यपलाशसमित्पायसद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशत-द्वयं हुत्वा। ॐ आप्यायस्वेति मन्त्रेणपृषदाज्यम्। ॐ आयं गौ॰पृश्नि० गौरीर्मिमायेति मन्त्रेण त्रिमध्वाक्त दूर्वांकुरैश्चाष्टोत्तरशतं जुहुयात्।

ततो ब्रह्मादि देवताभ्य एकैकाज्याहुतिं हुत्वा होमशेषंसमाप्य, वस्त्रादिभिराचार्यं सम्पूज्य षोडशत्रयोदश वा ब्राह्मणानध्वक्ष्यमाणनामभिः तावतः फलपक्वान्नैस्तदभावे तण्डुलैर्वा पूरितान् दक्षिणायुतान् घटान् दद्यात्।

तत्र षोडशनामानि। ॐ सोमेश्वरायनमः १ ॐ ईशानाय० २ ॐ शंकराय० ३ ॐगिरिजाधवाय० ४ ॐ महेशाय० ५ ॐ सर्वभूतेशाय० ६ ॐ स्मरारये० ७ ॐ त्रिपुरान्तकाय० ८ ॐ शिवाय० ९ ॐ पशुपतये० १० ॐ शम्भवे० ११ ॐ त्र्यम्ब-

काय० १२ ॐ चन्द्रशेखराय० १३ ॐ गंगाधराय० १४ ॐ महादेवाय० १५ ॐ वामदेवाय० १६ इति ॥

त्रयोदश पक्षेतु-ॐ भवायनमः १ ॐ शर्वाय० २ ॐ रुद्राय० ३ ॐ पशुपतये० ४ ॐ उग्राय० ५ ॐ महते०६ ॐ भीमाय० ७ ॐ ईशानाय० ८ ॐ सद्योजाताय० ९ ॐ वामदेवाय० १० ॐ अघोराय० ११ ॐ तत्पुरुषाय०१२ ॐ ईशानाय नमः १३॥ इति त्रयोदश नामानि ॥ ततः कुम्भसहितां प्रतिमामाचार्याय निवेदयेत् । तत्र मन्त्रः ॥

शम्भो प्रसीद देवेश सर्व लोकेश्वर प्रभो ॥
तव रूपप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः ॥१॥

यद्भक्त्या देवदेवेश मया व्रतमिदं कृतम् ॥
न्यूनं वाथ क्रियाहीनं परिपूर्णं तदस्तु मे ॥२॥

इति प्रार्थ्य व्रतपरिपूर्त्तये सवत्सां गामाचार्याय दत्त्वा

यथाशक्ति ब्राह्मणान् पायसादिना सन्तर्प्य-आशिषो गृहीत्वा विसर्जयेत्ततः बन्धुभिः सह भुंजीत ॥

इति स्कान्दोक्तं सोमवारव्रतोद्यापनं समाप्तम्

तदनन्तर दूसरे दिन प्रातःकालफिर प्रधान देवके सहित सर्वदेवोंका षोडशोपचारसे पूजन कर, वेदीमें विधिपूर्वक अग्निस्थापना करके "ॐ प्रजापतयेस्वाहा" इस मन्त्रसे 'ॐ स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय न मम'। इस मन्त्रतक घृतसे आहुति देनेके पश्चात् "ॐत्र्यम्बकं यजामहे० इस महामन्त्रसे एवं "ॐ आयंगौ॰ इस मन्त्रसे भी जौ, चावल, तिल, घृत, क्षीर-आदि पदार्थोंसे दोसौ आठ २०८ बार हरएक मन्त्रसे हवन करके फिर ब्रह्मादि देवताओंको घृतसे एक २ आहुति देवें।

ॐ आप्यायस्व॰ तथा ॐ आयंगौ॰ इन मन्त्रोंसे मधु और दूर्वाङ्कुरोंसे १०८ बार आहुति देवें इस प्रकार हवनको समाप्त करके श्री आचार्य देवकी

वस्त्रादिसे पूजा कर एवं १६ अथवा १३ ब्राह्मणोंकी भी पूजा करके सोलह या तेरह ताम्र, पीतल, अथवा मृत्तिका के घड़ोंको यथा शक्ति दक्षिणा के सहित फल, व पके हुवे सात्विक अन्नोंसे या इनके अभावमें केवल चावलोंसे ही भरकर 'ॐ सोमेश्वराय नमः' इस मन्त्रसे क्रमपूर्वक मन्त्र पढतेहुए संकल्प कर दान करदेवें। तत् पश्चात् श्रीप्रधानदेव (साम्बशिव) की मूर्ति, मध्य कलशके सहित "शम्भो प्रसीद०" इस मन्त्रको बोल कर श्रीआचार्यको प्रदान करें।

शम्भोप्रसीद० इस मन्त्रका अर्थ यह है कि हे सम्पूर्ण लोकोंके स्वामी ! हे प्रभो ! हे शिव ! तथा सर्व देवोंके अधिपति महादेव ! मेरे ऊपर प्रसन्न हो, और आपके रूपके दानसे मेरे सब मनोरथ (कार्य) सिद्ध हो ॥ हे देवदेवेश ! श्रद्धा सहित जो यह सोलह सोमवार मनसाव्रत मैंने किया है, वह न्यून (अल्प) अथवा क्रियासे हीन भी हुआ हो तो वह परिपूर्णताको प्राप्त हो।

ऐसी हार्दिक प्रार्थना करके साष्टाङ्ग नमस्कार करे, और व्रत की पूर्ण सिद्धिके लिये श्रीआचार्यदेवको सवत्सा गौ का दान देकर एवं यथाशक्ति ब्राह्मणोंको खीरआदि पदार्थोंसे भोजन कराकर तृप्त करे और उनसे आशीर्वाद ग्रहण कर स्थापित देवोंका विसर्जन करे। पश्चात् व्रतकर्ता अपने भाई बन्धुओंके साथ भोजन करें॥

॥ इति स्कांदोक्तं भाषाटीकासहितं सोमवारव्रतोद्यापनं समाप्तम् ॥

॥ ॐ श्री साम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

॥ ॐ नमो पार्वतीपतये हर हर हर महादेव हर ॥

ॐ नमः शिवाय

आरती त्रिगुण भगवान् शिवजीकी

ॐ हर शिव ओंकारा,जयशिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गीधारा॥ ॐ हर हर हर महा-देव॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजे॥ शिव०॥ हंसासन गरुड़ासन वृषभासन साजे॥ ॐ हर हर हर महादेव॥ २॥ दोय भुज चारुचतुर्भुज दशभुजते सोहे॥ शिव०॥ तीनों रूप निरखता त्रिभुवनजन मोहे॥ ॐ हर हर हर०॥३॥ अक्षमाला वनमाला रुंड-मालाधारी॥ शिव०॥चन्दन मृगमद मोहे भालेशशि-धारी॥ ॐ हर हर हर०॥४॥ श्वेताम्बर पीताम्बर व्याघ्राम्बर अंगे॥ शिव०॥ सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥ ॐ हर हर हर०॥५॥ शिवकर मध्य-कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता॥ शिव०॥ दुःख हरता शुभ भरता सुख सम्पति करता॥ ॐ हर हर हर०

॥ ६ ॥ काशीमें एक वासी नन्दा ब्रह्मचारी ॥शिव०॥ नित उठ भोग लगावत महिमा अतिभारी॥ॐ हर हर हर० ॥ ७ ॥ लक्ष्मी अरु सावित्री वर पार्वती संगा ॥ शिव० ॥ सुमेरु गिरिकैलासी शेषाचल रंगा ॥ ॐहर हर हर० ॥ ८ ॥ तीनों एक स्वरूपा सुहृदयमें धरना ॥ शिव० ॥ इनमें भेद न जानहु भव सागर तरना ॥ ॐ हर हर हर० ॥ ९ ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ॥ शिव० ॥ प्रणवाक्षरके मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर ॥ १० ॥ त्रिगुण-स्वामीजीकी आरती जो कोई नर गावे ॥ शिव० ॥ कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ ॐ हर हर हर महादेव॥ ११ ॥

इति त्रिगुण शिवारती समाप्त

मन्त्रपुष्पान्जलिः

हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्रपूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमःसार्वायुष आन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ श्री साम्बशिवाय नमः मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

शिवकीर्त्तन-धुन

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैवकेवलम् । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ (नारदपुराण)

हर हर हर महादेव शम्भो ।
काशी विश्वनाथ गंगा ॥ १ ॥

शिवहर शंकर गौरीशम् ।
वन्दे गंगाधरमीशम् ॥ २ ॥

भोले शम्भु भोलेनाथ
दया करो अब दीनानाथ ॥ ३ ॥

हर हर हर महादेवा ।
पार्वतीवल्लभ सदाशिवा ॥ ४ ॥

भोलेनाथ भोलेनाथ बोल प्यारे ।
गंगा तरङ्ग डमरू वारे ॥ ५ ॥

शम्भो ओंकारे अविनाशी ।
गंगाधर कैलासी ॥ ६ ॥

जयति शिवा शिव जानकिराम ।
गौरीशंकर सीताराम ॥ ७ ॥

हर हर शंकर दुखहर सुखकर ।
अघतमहर हर हर शंकर ॥ ८ ॥

साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव ।
साम्ब सदाशिव जयशंकर ॥ ९ ॥

ओंशिव ओंशिव शिव शिव ओम् ।
ओं ओं ओं ओं जय शिव ओम् ॥१०॥

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ।
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॥११॥

इति श्री सुखेडाग्रामवास्तव्य वाराणसीस्थगवर्नमेण्ट-संस्कृतमहाविद्यालयपरीक्षोत्तीर्ण, स्वर्गीय पं. श्रीरेवा-

शङ्करात्मज, राजज्योतिषी रमलशास्त्री "अग्निहोत्री नागदा", पण्डित श्रीसिद्धनाथ शर्मणासंगृहीतोद्यापनविधि भा. टी. सहिता सोलह-सोमवार - मनसाव्रतकथा समाप्ता

ॐ शान्तिः ! ॐ शान्तिः !! ॐ शान्तिः !!!

ॐ साम्ब श्रीसदाशिवार्पणमस्तु

ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर हर महादेव हर

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

SHRIKRISHNADASS